विद्यालय और समाज के लिए शिक्षक-शिक्षा का मानवीयकरण

रंजना अरोड़ा*

विद्यालय और समाज का पारस्परिक संबंध बहुत ही गहरा है। वास्तव में पहले तो विद्यालय समाज की उपज होंगे और बाद में जो समाज सामने आया होगा वह विद्यालयों की ही देन होगा। यदि हम आज के संदर्भ में देखें तो यह मूल्यांकित करना मुश्किल होता जा रहा है कि विद्यालय का प्रभाव समाज पर ज़्यादा है या समाज का विद्यालय पर। यदि हम किसी विशेष सरोकार जैसे कि हिंसा के संदर्भ को लें और विश्लेषण करें तो हम पातें हैं कि समाज में हिंसा बढ़ रही है इसलिए विद्यालय भी इससे अछूते नहीं हैं, साथ-ही-साथ यह भी कहा जा सकता है कि विद्यालयों में चूँकि हम शांति की संस्कृति स्थापित नहीं कर पा रहे हैं इसलिए विद्यालय से निकलने वाले विद्यार्थी जो समाज के कर्णधार बनते हैं, वे हिंसा की संस्कृति में ही पल-बढ़कर बाहर निकल रहे हैं और इसलिए समाज भी शनैः शनैः हिंसा के पथ पर अग्रसर हो रहा है।

विद्यालय समाज का दर्पण है और समाज विद्यालय का, पर यदि इनको अलग-अलग मत के रूप में लिया जाए तो दोनों ही एक जैसे प्रमाणों से बार-बार स्थापित किए जा सकते हैं। यह हम सभी के लिए चिंता का विषय है।

हालाँकि एक और दृष्टिकोण भी अक्सर सामने आता है, जब हम विद्यालयी शिक्षा से संबंधी योजनाएँ अथवा कानून बनाते हैं तो इन योजनाओं और कानूनों की ज़रूरत को स्थापित करने के लिए अक्सर जो तर्क दिए जाते हैं वे इस प्रकार होते हैं, 'निरक्षरता व्यक्ति को अज्ञानी बनाती है जिससे हिंसा और अपराध को बढ़ावा मिलता है।' 'सभी को पढ़ना चाहिए और स्वस्थ समाज का निर्माण करना चाहिए।' ये तर्क भी गलत नहीं हैं। पहले जो कहा गया है उसमें हमने कहीं यह कथन नहीं दिया है कि विद्यालयी शिक्षा नहीं दी जानी चाहिए।

विद्यालयी शिक्षा प्रत्येक के लिए बहुत ज़रूरी है परंतु इसके द्वारा क्या दिया जाए, कैसे दिया जाए और इसमें कार्य करने वालों की भूमिका क्या हो, इस पर बार-बार तर्क-वितर्क, चिंतन और इसके आधार पर मूर्त प्रयासों की आवश्यकता है।

* *एसोसिएट प्रोफ़ेसर,* डिपार्टमेंट ऑफ सेकेंडरी ऐजुकेशन, एनसीईआरटी, नयी दिल्ली

दस वर्ष (वर्ष 2001-2002) पहले, जब क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर में चलने वाले दो वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम के अंतर्गत समुदाय कार्य में राजस्थान के ग्रामीण इलाकों के स्कूलों में जाने का अवसर मिला था। वहाँ बहुत से स्कूलों में अक्सर पानी के दो अलग-अलग घड़े दिखाई देते थे। प्राथमिक कक्षाओं में लड़के और लड़कियाँ भी अलग-अलग पंक्तियों में बैठते थे। पूछने पर शिक्षक कहते थे, यहाँ के समाज में ऐसा ही प्रचलन है और अभिभावक चाहते हैं स्कूल भी इसका अनुकरण करें। ऐसा स्कूल, जो समाज को सुधारने की ज़िम्मेदारी न निभाते हुए भेदभाव संबंधी प्रचलनों का अंधानुकरण करता है, नई पीढ़ी के ज़रिये इन रूढ़ियों को और पुख्ता कर देता है। आज परिस्थितियाँ बदल तो रही हैं परंतु क्या वास्तव में दृष्टिकोण भी बदल रहे हैं?

विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था ने पिछले कई दशकों में जो किया है यदि हम उस पर दृष्टिपात करें तो पायेंगे हमारे देश में इस के प्रसार की ओर अथक प्रयास हुए हैं। इसी शिक्षा व्यवस्था से निकले विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर भी ख्याति प्राप्त की है। परंतु यदि कुल पढ़ने वाली जनसंख्या के अनुपात में इसे देखा जाय तो यह प्रतिशत बहुत ही कम है। आज भी हमारी स्कूली व्यवस्था में बच्चों के शाला त्याग और कम निष्पत्ति जैसे सरोकार मज़बूत जड़ें जमाए हुए हैं। विद्यालयों में गुणवत्ता शिक्षा महज़ एक नारा बन चुका है। जब स्कूली व्यवस्था ऐसे विद्यार्थियों को समाज को प्रदान करेगी जो या तो असफलता की कुंठा लिए होंगे, या शाला त्याग की अपराध भावना से ग्रसित होंगे या फिर जेंडर भेद और जाति भेद जैसी रूढ़ियों के शिकार होंगे तो हम स्वस्थ समाज की आशा कैसे रख सकते हैं?

कैसे सुधारी जाय यह व्यवस्था? आज़ादी के तुरंत बाद के वर्षों से लेकर आज इक्कीसवीं शताब्दी का एक दशक बीत जाने के बावजूद यह प्रश्न, यक्ष प्रश्न की तरह हमारे सामने है। ऐसा नहीं है कि हमारे पास इसका उत्तर नहीं हैं। हम सभी जानते हैं कि जब तक शिक्षक-शिक्षा की प्रक्रिया में आमूल-चूल परिवर्तन नहीं लाया जायेगा, स्कूली व्यवस्था चाहे कितनी भी सुधार प्रक्रियाओं से गुज़रे, इसमें परिवर्तन के स्पष्ट प्रभाव नहीं दिखेंगे।

यहाँ ऐसा कहना भी उचित नहीं होगा कि शिक्षक-शिक्षा में सुधार के प्रयत्न नहीं हो रहे हैं। पिछले पाँच दशकों से स्कूली शिक्षा के साथ-साथ शिक्षक शिक्षा की पाठ्यचर्या भी सुधार की प्रक्रियाओं से गुज़री है। इसके तहत स्कूलों में भी शिक्षण अधिगम के तरीकों में सुधार का दावा तो किया जाता है लेकिन इस दावे के अंतर्गत व्यवस्था का बहुत ही छोटा सा हिस्सा शामिल हो पाता है। इस छोटे से हिस्से में शामिल होते हैं वे स्कूल जहाँ नवाचार किये गये या किये जा रहे हैं या फिर जहाँ स्व-अभिप्रेरित शिक्षकों अथवा शिक्षक प्रशिक्षकों ने सुधार का बीड़ा उठाया है। यही कारण है 1.2 अरब जनसंख्या वाले भारत में जहाँ स्कूल जाने वाले बच्चों की संख्या करोड़ों में है, बच्चों के अधिगम और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का मुद्दा मुँह बाए खड़ा है।

अभी हाल ही में देश की स्कूली शिक्षा को दिशा निर्देश देने हेतु स्कूली शिक्षा और शिक्षा के क्षेत्रों में अपना योगदान देने वाली

संस्था एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 का विकास किया गया जिसमें सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों तथा अन्य कई संबंधित पणधारियों की भागीदारी रही। इस रूपरेखा में शिक्षक शिक्षा के लिए एक नई दृष्टि सामने रखी गयी जिसमें यह स्पष्ट तौर पर इंगित किया गया कि शिक्षक शिक्षा को विद्यालयी व्यवस्था की उभरती माँगों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए और इसके लिए हमारे शिक्षक को निम्न भूमिकाओं के लिए तैयार किया जाना चाहिए-

- शिक्षण अधिगम परिस्थितियों में उत्साह बढ़ाने वाले, सहायक तथा मानवीय सहजकर्त्ता के रूप में, विद्यार्थियों को उनकी प्रतिभाओं को जानने के योग्य बनाने तथा उन्हें इस योग्य भी बनाने के लिए कि वे अपनी भौतिक तथा मानसिक क्षमताओं का पूरी तरह उपयोग कर सकें, स्वयं का चारित्रिक विकास कर सकें, अपेक्षित सामाजिक एवं मानवीय मूल्य ग्रहण कर सकें ताकि वे उत्तरदायी नागरिकों के कर्त्तव्यों का निर्वाह कर पाएँ।
- शिक्षक उस समूह का क्रियाशील सदस्य बनें जो पाठ्यचर्या सुधार के लिए सचेतन प्रयास करते हैं ताकि यह बदलती सामाजिक आवश्यकताओं और विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए सार्थक हो।
- शिक्षक की उभरती उपरोक्त दोनों भूमिकाएँ जिस महत्वपूर्ण बात की ओर इशारा कर रही हैं वह है, **शिक्षक शिक्षा का मानवीयकरण**। आज हममें से बहुत से लोग ऐसे होंगे जो नित प्रतिदिन के समाचारों में विद्यालयों में बढ़ती हिंसा, शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों पर अत्याचार, विद्यार्थियों द्वारा शिक्षकों के खिलाफ़ उठाए जाने वाले कदमों के संबंध में पढ़ते, देखते और सुनते होंगे। ये समाचार कहीं-न-कहीं ये दर्शा जाते हैं कि हमारी शिक्षक-शिक्षा की व्यवस्था मानवीय शिक्षकों की बजाय मशीनी शिक्षक तैयार कर रही है जिन्हें यह आभास ही नहीं है कि वे किसी औद्योगिक इकाई का हिस्सा नहीं हैं, वे स्वयं मानव हैं और उन्हें मानवीय संवेदनाओं वाले विद्यार्थियों को समाज में उनकी मानवीय भूमिकाएँ निभाने हेतु तैयार करना है। शिक्षकों की सहायता के लिए जो पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकें दी जाती हैं उनमें ऐसी विषय-वस्तु देने के प्रयास किये जाते हैं जो विद्यार्थियों को विश्व, देश तथा समाज के विभिन्न आयामों को समझने में सहायता करे तथा तमाम वैश्विक, राष्ट्रीय एवं सामाजिक प्रक्रियाओं में योगदान देने योग्य बनाएँ। अब यह शिक्षक पर ही निर्भर करता है कि वह पाठ्यचर्या को कक्षा में किस प्रकार हस्तांतरित करता है। यदि वह विषय-वस्तु को विद्यार्थियों के अनुभव से न जोड़कर अलग-थलग सी कुछ जानकारी देता है तो वह विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध नहीं होती है, उनमें द्वन्द्व उत्पन्न हो जाता है, ऐसे द्वंद्व को यदि आगे ज्ञान के निर्माण का अवसर न देते हुए वहीं पर छोड़ दिया जाय तो विद्यार्थी मजबूर हो जाता है ऐसे रास्ते अपनाने के लिए जिसमें या तो वह जैसे का तैसा ही रट ले या फिर नकल करे या कोई अन्य छोटा रास्ता अपनाए उत्तीर्ण होने के लिए। इस प्रकार अमानवीय व्यवहार

शिक्षक आपने मुझे अधकचरा ज्ञान दिया

एक शिक्षक ने सपने में अपने एक विद्यार्थी को आज से पचास साल आगे के समय में देखा। विद्यार्थी गुस्से में था और बोला, 'मुझे देश के अतीत और प्रशासन के बारे में अत्यधिक विस्तार से और विश्व के बारे में बहुत कम क्यों सिखाया गया?' वह इसलिए गुस्से में था क्योंकि उसे किसी ने नहीं बताया था कि एक वयस्क होने के नाते उसे रोज़ाना वैश्विक परस्पर निर्भरता संबंधी समस्याओं से जूझना पड़ेगा। ये समस्याएँ शांति, सुरक्षा, जीवन की गुणवत्ता, मुद्रा स्फीति या प्राकृतिक संसाधनों की कमी से जुड़ी हो सकती हैं। ''मुझे चेताया क्यों नहीं गया? आखिर क्यों मुझे उन्नत ढंग से शिक्षित नहीं किया गया? आखिर क्यों मेरे शिक्षकों ने मुझे भविष्य में आने वाली समस्याओं से अवगत नहीं कराया और यह समझने में मेरी मदद नहीं की कि मैं परस्पर निर्भर मानव जाति का एक सदस्य हूँ?''

विद्यार्थी अत्यधिक गुस्से के साथ चिल्लाया, ''आपने इन विशाल मशीनों तक मेरे हाथों को पहुँचाने में मेरी सहायता की, आपने मेरी आँखों को दूरबीन एवं सूक्ष्मदर्शी, मेरे कानों को टेलिफोन, रेडियो के साथ और मेरे दिमाग को कंप्यूटर के साथ जोड़ा लेकिन आपने मेरे दिल को प्यार और मानव जाति के लिए चिंता से जोड़ने में मदद नहीं की। शिक्षक, आपने मुझे अधकचरा ज्ञान दिया।''[1]

जन्म लेने लगते हैं और हिंसा को बढ़ावा मिलता है।

आज आवश्यकता है कि शिक्षकों की तैयारी को अति गंभीरता से लिया जाए। शिक्षक का व्यवसाय ही ऐसा व्यवसाय है जो सभी व्यवसायों से जुड़े व्यक्तियों को तैयार करता है। आज अपने-अपने व्यवसायों में शीर्ष पर पहुँचे व्यक्ति भी अपने विद्यालयी जीवन के शिक्षकों की याद कर उन्हें नमन ज़रूर करते हैं। इस कथा को सिद्ध करता है निम्न अनुच्छेद–

''जब मैं अपने दूसरे शिक्षक के विषय में सोचता हूँ तो मुझे बचपन के उन दिनों की याद आ जाती है जब मैं 13 साल की उम्र में आठवीं कक्षा का विद्यार्थी था। श्री शिवा सुब्रमणियम अय्यर मेरे शिक्षक थे। वे हमारे स्कूल के एक अच्छे शिक्षक थे। हम सभी उनकी कक्षा में जाना और उनकी बातें सुनना पसंद करते थे। एक दिन वे हमें पक्षी के उड़ने के विषय में बता रहे थे। उन्होंने ब्लैकबोर्ड पर चिड़िया के पंख, पूँछ, सिर और शारीरिक बनावट का चित्र बनाया। उन्होंने समझाया कि चिड़िया ऊपर कैसे उठती है और उड़ती है। उन्होंने यह भी समझाया कि पक्षी उड़ते समय कैसे अपनी दिशा बदलते हैं। लगभग पच्चीस मिनट तक उन्होंने हमें पढ़ाया और पक्षियों की उड़ान के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी दी।

कक्षा के अंत में उन्होंने जानना चाहा कि हम पक्षी का उड़ना जान पाए कि नहीं। मैंने कहा, ''मुझे समझ में नहीं आया।'' जब मैंने यह कहा तो शिक्षक ने दूसरे विद्यार्थियों से भी पूछा कि उन्हें समझ में आया कि नहीं। बहुत से विद्यार्थियों ने कहा कि उन्हें समझ में नहीं आया। वह हमारी प्रतिक्रिया से परेशान नहीं हुए क्योंकि वे एक निष्ठावान शिक्षक थे। हमारे शिक्षक ने कहा कि वे हमें समुद्र के किनारे लेकर जाएँगे। उस शाम पूरी कक्षा रामेश्वरम के समुद्र के किनारे थी। पूरे वेग से आती समुद्री लहरें रेत के टीलों को भिगो जाती थीं। हम उस शाम का आनंद ले रहे थे। पक्षी चहचाहते हुए उड़ रहे थे।

उन्होंने हमें समुद्री पक्षियों का दस और बीस की संख्या में एक होकर उड़ना दिखाया। उन्होंने हमें पक्षियों को दिखाते हुए कहा, 'गौर से देखो, जब पक्षी उड़ते हैं तो वे कैसे लगते हैं?' हमने उनके पंखों को फड़फ़ड़ाते हुए देखा। उन्होंने हमें कहा कि पूँछ का भाग देखो और फैले हुए पंखों का संयोग देखो, साथ ही मुड़ती हुई पूँछ भी देखो। हमने बहुत करीब से देखा और पाया कि इस अवस्था में पक्षी उसी दिशा में उड़ते हैं जिसमें वे उड़ना चाहते हैं। तब उन्होंने हमसे एक प्रश्न पूछा ''इंजन कहाँ है? उसे शक्ति कहाँ से मिलती है?'' पक्षी अपने जीवन और अभिप्रेरणा से शक्ति प्राप्त करते हैं। ये सारी बातें उन्होंने पंद्रह मिनट में समझा दीं। हम सब इस व्यावहारिक उदाहरण से गतिकी को अच्छी तरह से समझ गए। यह बहुत अच्छा था। मुझे लगा यह वास्तव में शिक्षण था।

मेरे लिए यह केवल समझना ही नहीं था कि पक्षी कैसे उड़ते हैं, बल्कि पक्षी की उड़ान मेरे अंदर प्रवेश कर चुकी थी और एक विशेष भाव का सृजन हो चुका था। उसी शाम से मैंने सोचा कि मेरे आगे का अध्ययन उड़ान और हवाई व्यवस्थाओं के संबंध में होगा। (हमारे भूतपूर्व माननीय राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा शिक्षक दिवस 2003 के अवसर पर दिए गए संबोधन के कुछ अंश।)[2]

वर्तमान में जो सरोकार सामने आ रहा है वह है ऐसे अभ्यर्थियों का शिक्षक शिक्षा के कार्यक्रमों में प्रवेश करना जिनकी अभिवृत्ति और रुचि शिक्षक की भूमिका निभाने की ओर कम वरन् रोजग़ार प्राप्त करने में ज़्यादा है। इस लिए इन कार्यक्रमों में इस पहलू पर ज़ोर देना आवश्यक हो जाता है कि शिक्षक विद्यार्थी शिक्षक शिक्षा के उद्देश्यों को गहराई से समझें और आत्मसात करें।

शिक्षक शिक्षा का मानवीयकरण

इस उभरते सरोकार को मूर्तरूप देने के लिए यह आवश्यक है कि हम 'शिक्षक-प्रशिक्षण' जैसी शब्दावली के इस्तेमाल से परहेज बरतें जिसमें शिक्षक का जन्तुकरण कर दिया जाता है और उसे प्रशिक्षण से इस योग्य बनाए जाने पर बल दिया जाता है जो व्यवस्था की कुछ विशिष्ट ज़रूरतों को पूरा कर सके।

हमें यह ध्यान रखना चाहिए, शिक्षक की तैयारी हेतु आया विद्यार्थी मानव है और उसे हमें यह सिखाना है कि उसकी कक्षा में आने वाले बच्चों और किशोरों को वह किस प्रकार मानवीय भूमिकाओं को निभाने के लिए तैयार करे। अत: हर स्तर पर यह संवाद स्थापित किया जाए कि अब शिक्षक-प्रशिक्षण के स्थान पर शिक्षक शिक्षा अथवा शिक्षक का व्यावसायिक विकास जैसी शब्दावली का इस्तेमाल हो और न केवल इस्तेमाल बल्कि ऐसे कार्यक्रमों के विषय में हमारी सोच भी बदले।

वर्तमान में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम, शिक्षकों को ऐसी व्यवस्था में समायोजित करने के लिए प्रशिक्षित करते हैं जिसमें शिक्षा को सूचना प्रदान करने की विधि के रूप में देखा जाता है। स्कूली पाठ्यचर्या के सुधार के प्रयासों को शिक्षक शिक्षा से पूरी तरह सहयोग नहीं मिलता। 1990 से 1999 के बीच किए गए प्रयास सेवारत शिक्षक-प्रशिक्षण पर ही केंद्रित रहे। इसके कारण सेवा-पूर्व तथा सेवारत शिक्षक शिक्षा के बीच की खाई और ज़्यादा गहरी हो गई। पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक तथा

माध्यमिक शिक्षक लगातार उच्च शिक्षा केंद्रों से अलग-थलग और दूर रहे। उनकी व्यावसायिक विकास की ज़रूरतों पर कतई ध्यान नहीं दिया गया। वर्तमान में अधिकतर शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम न तो नए विचारों को विषय-वस्तु और पढ़ाने के तरीकों में शामिल करते हैं और न ही विद्यालय और समाज के बीच के संबंधों को गंभीरता से लेते हैं। नवाचारी शैक्षिक प्रयोगों से जुड़ने के अवसर भी कम ही दिए जाते हैं। ज़्यादातर शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम शिक्षक-विद्यार्थी को उनके स्वयं के अनुभवों पर मनन करने के अवसर नहीं देते और इसलिए वे शिक्षक को सुधारक के रूप में सशक्त नहीं कर पाते।

एक बार फिर से यह याद दिलाना ज़रूरी है कि आज इस व्यवसाय में जो पात्र प्रवेश ले रहे हैं उनमें से अधिकतर इसमें महज रोजगार के अवसर देखते हैं। ऐसे में शिक्षक शिक्षा कायक्रमों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण हो जाती है। इस व्यवसाय में प्रवेश करने वाले शिक्षार्थियों को सबसे पहले समाज के प्रति अपना दायित्व समझने और बेहतर विश्व के लिए काम करने हेतु तैयार करने की ज़रूरत है और इसके पश्चात् उनके कर्म क्षेत्र में उन्हें जिस तरह की भूमिका निभानी है, उसके लिए शिक्षकों की आवश्यक तैयारी[3] ऐसी हो–

(क) कि वे बच्चों का ख़्याल कर सकें और उनके साथ रहना पसंद करें।

(ख) सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संदर्भों में बच्चों को समझ सकें।

(ग) ग्रहणशील और निरंतर सीखने वाले हों।

(घ) शिक्षा को अपने व्यक्तिगत अनुभवों की सार्थकता की खोज के रूप में देखें तथा ज्ञान निर्माण को मननशील अधिगम की लगातार उभरती प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करें।

(ङ) ज्ञान को पाठ्यपुस्तकों के बाह्य ज्ञान के रूप में न देखकर साझा संदर्भों और व्यक्तिगत संदर्भों में उसके निर्माण को देखें।

(च) समाज के प्रति अपना दायित्व समझें और बेहतर विश्व के लिए काम करें।

(छ) उत्पादक कार्य के महत्त्व को समझें तथा कक्षा के बाहर और अंदर व्यावहारिक अनुभव देने के लिए कार्य को शिक्षण का माध्यम बनाएँ।

(ज) पाठ्यचर्या की रूपरेखा, उसके नीतिगत निहितार्थ एवं पाठों का विश्लेषण करें।

इस लेख में पूर्व-अनुच्छेदों में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में दिए गए शिक्षक शिक्षा के परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए संपूर्ण देश में चल रहे विभिन्न शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों को मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद् द्वारा विकसित 'शिक्षक शिक्षा के लिए, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-मानवीय एवं व्यावसायिक शिक्षक की तैयारी की ओर'[4] ज़ोर देती है- शिक्षक शिक्षा को मुक्त, मानवीय एवं समावेशित शिक्षा की माँगों के प्रति उत्तरदायी बनाने पर। इसके अनुसार यह उद्देश्य तभी प्राप्त किया जा सकता है जब शिक्षक शिक्षा पाठ्यचर्या विद्यार्थी-शिक्षक को निम्नलिखित के लिए उपयुक्त और ज़रूरी अवसर प्रदान करे–

- बच्चों का अवलोकन करने, उनके साथ जुड़ने, संवाद करने तथा स्वयं को उनके साथ संबंधित करने के।

- स्वयं को तथा दूसरों को समझने के; लोगों के विश्वास, धारणाओं, भावों और अपेक्षाओं को समझने के; स्व-विश्लेषण, स्व-मूल्यांकन, अनुकूलन, लचीलापन, सृजनात्मकता तथा नवाचार की योग्यता का विकास करने के।
- स्व-निर्देशित अधिगम के लिए आदतें और क्षमता विकसित करने के लिए। विद्यार्थी-शिक्षक के पास समय हो सोचने का, मनन करने का, ग्रहण करने तथा नए विचारों को सामने रखने का।
- विषय-वस्तु के साथ जुड़ाव करे, विषयी ज्ञान की जाँच करे तथा सामाजिक यथार्थ को समझे और जाँचे। विषय-वस्तु को बच्चों के संदर्भों से जोड़े और विवेचनात्मक सोच का विकास करे।
- पेडागॉजी (शिक्षणशास्त्र), अवलोकन दस्तावेजीकरण, विश्लेषण तथा विवेचन, अभिनय, हस्तशिल्प, कहानी-कथन तथा मननशील खोज में व्यावसायिक कौशलों का विकास करें।

सैद्धांतिक तथा empirical ज्ञान को शामिल करने के साथ-साथ शिक्षक के अनुभवजन्य ज्ञान को भी ध्यान में रखते हुए ध्यानपूर्वक बनाई गई पाठ्यचर्या उपरोक्त सभी प्रकार के अवसर प्रदान कर सकती है।

शिक्षक शिक्षा की पठ्यचर्या की रूपरेखा तीन मुख्य पाठ्यचर्या क्षेत्रों को शामिल करते हुए बनाई जा सकती है वे हैं-

(अ) शिक्षा के आधार

(ब) पाठ्यचर्या तथा शिक्षण शास्त्र तथा

(स) विद्यालयी इंटर्नशिप

(अ) शिक्षा के आधार में शामिल किए जा सकते हैं-

(i) शिक्षार्थी अध्ययन,

(ii) समसामयिक अध्ययन,

(iii) शैक्षणिक अध्ययन

(ब) पाठ्यचर्या तथा शिक्षण शास्त्र के अंतर्गत (i) पाठ्यचर्या अध्ययन तथा शिक्षण शास्त्रीय अध्ययन शामिल किए जा सकते हैं।

(स) स्कूल इंटर्नशिप जिसमें विद्यार्थी-शिक्षक का संपर्क प्रत्यक्ष रूप में उसके विद्यार्थियों और उसके कर्मक्षेत्र से होता है, तो यहाँ शिक्षक विद्यार्थियों के परिप्रेक्ष्य, व्यावसायिक क्षमताओं, शिक्षक हेतु आवश्यक संवेदनाओं और कौशलों के पुख़्ता विकास के लिए पर्याप्त अवसर दिए जा सकते हैं।

यदि ऐसी पाठ्यचर्या के द्वारा अलग-अलग अवस्थाओं (पूर्व-प्राथमिक, प्रारंभिक तथा माध्यमिक) के शिक्षक की तैयारी के लिए शिक्षक-विद्यार्थी को अवस्था-विशेष के बच्चों की विकास की विशेषताओं को सैद्धांतिक रूप से समझने के साथ-साथ प्रत्यक्ष रूप से अवलोकित करने, बच्चों के साथ काम करने, उनकी पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकों के साथ व्यावहारिक रूप से जुड़ने तथा स्कूली ज्ञान को बच्चों के संदर्भ के साथ जोड़ने के पर्याप्त अवसर मिलेंगे, वह बच्चों के प्रश्नों से ज्ञान का निर्माण करना सीखेंगे, ज्ञान को महज पुस्तकीय नहीं मानेंगे तो आशा की जा सकती है, शिक्षण व्यवसाय में आने वाली ये नई सोच और

नई दिशा वाले शिक्षक अवश्य ही जीवन में मानवीय मूल्यों को सर्वोच्च स्थान देंगे और अपने विद्यार्थियों को भी ऐसा करना सिखाएँगे। तब एक बार फिर ये हमें स्मरण कराएँगें उस शिक्षक की जो विद्यालय में शिक्षण में टैगोर की मदद् करने आया था– ''उसके साथ बच्चों को कभी भी ऐसा नहीं लगा कि वे टीचिंग क्लास तक सीमित थे, उन्हें लगता था कि उनकी पहुँच हर जगह है। वे उसके साथ वसंत ऋतु में जंगल में जा सकते थे जहाँ साल के पेड़ फूलों से लदे हुए थे और वहाँ वह उन्हें उत्साह से अपनी पसंदीदा लबरेज़ कविताएँ सुनाता....। उसे बच्चों की समझने की शक्ति पर कभी अविश्वास न था। वह जानता था कि बच्चों के लिए अक्षरशः तथा सटीक तौर पर किसी चीज़ को समझना ज़रूरी नहीं था। बल्कि ज़रूरी यह था कि उनके मस्तिष्क को जगा दिया जाए, और इसमें वह सफल हमेशा रहा। वह अन्य शिक्षक जैसा न था, महज पाठ्यपुस्तकों के वाहक। उसने अपने शिक्षण को व्यक्तिगत बनाया, वह स्वयं इसका एक स्रोत था, और इसलिए वह जीवन की सामग्री से निर्मित था। मानव स्वभाव में बिल्कुल आसानी से घुल मिल-जाने योग्य।'[5]

ऐसे शिक्षकों की ही परिकल्पना शिक्षा के अधिकार कानून 2009 ने भी की है तभी तो यह कानून इस बात पर जो़र देता है कि बच्चों को सीखने के दबाव, तनाव और चिन्तारहित वातावरण दिया जाए, बच्चों को शारीरिक और मानसिक किसी प्रकार की भी यंत्रणा न दी जाये, मूल्यांकन निरंतर और व्यापक हो, इससे बच्चों पर किसी प्रकार का दबाव न बढ़े और बच्चे खोज करते हुए, तरह-तरह की गतिविधियों के साथ आनन्दपूर्वक अधिगम करें। विद्यालय में बच्चों को ऐसा सक्षम वातावरण वही शिक्षक दे सकता है जो ज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया में विश्वास रखता हो, बच्चों के प्रति स्नेहमयी हो, रूढ़ियों से ग्रसित न हो और वास्तविक अर्थों में मानवीय हो।

संदर्भ

1. एन.सी.ई.आर.टी. 2006. *शान्ति के लिए शिक्षा. राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र.* नयी दिल्ली, पृष्ठ-36.
2. Teachersday, *Teachers day India,* www.indianchild.com/teachers-day-india.htm
3. _____ 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा.* 2005 नयी दिल्ली, पृ-122.
4. एन.सी.टी.ई. 2009. *नेशनल करीकूलम फ्रेमवर्क फ़ॉर टीचर एजूकेशनः टूवर्ड्स प्रिपेयरिंग प्रोफेशनल एन्ड ह्यूमन टीचर.* नयी दिल्ली.
5. टैगोर रवीन्द्रनाथ. 1996. *'माई स्कूल' इंगलिश राइटिंग ऑफ टैगोर'.* खण्ड 2. संपादक दास, साहित्य अकादमी, दिल्ली.